पाठ-12

अभ्यास की महिमा

बोपदेव एक मंदबुद्धि बालक था। वह पढ़ने-लिखने में बहुत कमजोर था। उसके सहपाठी उसे चिढ़ाते थे। कोई उसे बुद्धू कहता तो कोई मूर्ख। बोपदेव भी अपने को मूर्ख समझने लगा।

गुरुजी बोपदेव को बहुत समझाते, लेकिन वह कुछ समझ न पाता। निराश होकर गुरुजी ने बोपदेव को उसके गाँव भेजने का निश्चय किया। उन्होंने बोपदेव से कहा- "तुम विद्या अर्जन नहीं कर सकते तो अपने गाँव जाकर कुछ कामकाज करो। परिश्रम के बिना कोई भी जीवन में सफल नहीं हो सकता।"

गुरुजी की बात सुनकर बोपदेव को बड़ा दु:ख हुआ। वह अपने गाँव के लिए चल पड़ा। चलते-चलते दोपहर हो गई। उसे जोर से प्यास लगी। पानी पीने के लिए वह एक कुएँ के पास गया। कुछ औरतें कुएँ से पानी भर रही थीं।

तभी बोपदेव का ध्यान कुएँ की जगत पर गया। उस पर कई गड्ढे थे। उसने औरतों से पूछा- "ये गड्ढे किसने बनाए हैं?" तब एक औरत ने उत्तर दिया- "गड्ढे हमने नहीं बनाए हैं। बार-बार घड़े रखने से ये गड्ढे अपने आप बन गए हैं।"

उत्तर सुनकर बोपदेव सोचने लगा– ''जब मिट्टी के घड़े से पत्थर घिस सकता है, तो बार-बार अभ्यास करने से मुझे विद्या क्यों नहीं आ सकती ?''

अभ्यास की महिमा उसकी समझ में आ गई। उसने निश्चय कर लिया– ''अब मैं मन लगाकर पढ़ूँगा, बार-बार अभ्यास करूँगा।''

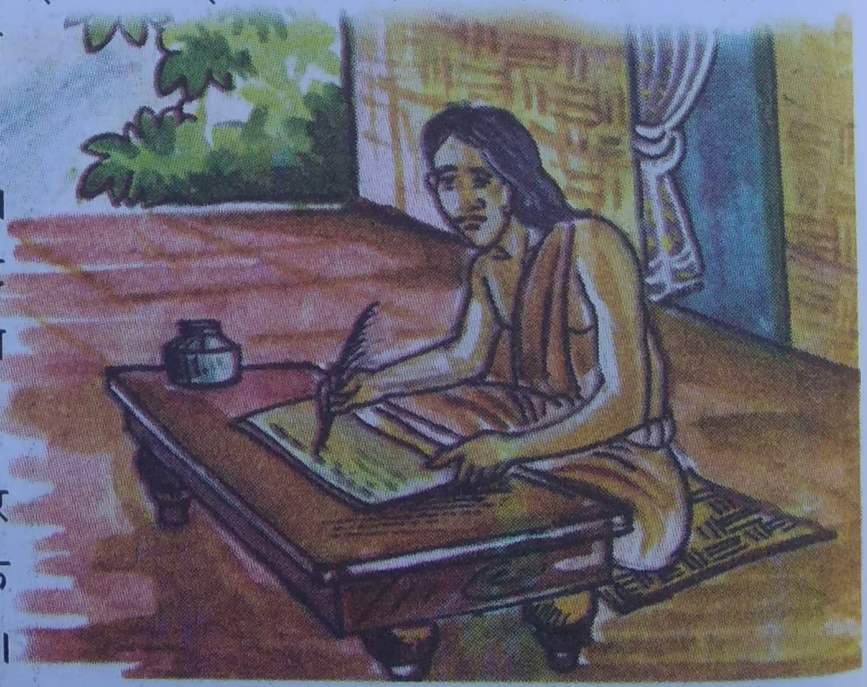

बोपदेव के विचार बदल गए। वह उसी समय पाठशाला लौट आया। उसके विचार में बदलाव देखकर गुरुजी प्रसन्न हुए।

अब बोपदेव खूब मन लगाकर पढ़ने लगा। बड़ा होकर यही बालक संस्कृत का एक प्रसिद्ध विद्वान बना।

अभ्यास-माला

1. 'अभ्यास की महिमा' कहानी को पढ़ो, समझो और अपने ढंग से सुनाओ।

2. उत्तर दो :

(क) बोपदेव कैसा बालक था ?

(ख) बोपदेव के सहपाठी उसे क्या कहकर चिढ़ाते थे ?

(ग) गुरुजी ने बोपदेव को कहाँ भेजने का निश्चय किया ?

3. कहानी को पढ़कर उत्तर लिखो :

(क) औरतें कुएँ पर क्या कर रही थीं ?

(ख) कुएँ की जगत पर गड्ढे कैसे बने थे ?

(ग) बोपदेव पाठशाला क्यों लौट आया ?

(घ) बोपदेव बड़ा होकर क्या बना ?

4. 'अभ्यास की महिमा' कहानी तुम्हें कैसी लगी ? इससे तुम्हें कौन-सी सीख मिली ?

5. इसी तरह की कोई अन्य कहानी पढ़ो और उसे संक्षेप में अपने साथियों को सुनाओ।

6. लिखो :

(क) 'ये गड्ढे किसने बनाए हैं ?'

किसने कहा ? .....

किससे कहा ? .....

(ख) 'ये गड्ढे हमने नहीं बनाए हैं ?'

किसने कहा ? .....

किससे कहा ? .....

7. आओ पढ़ें, दोहराएँ और लिखें :

(क) द् + य = (द्य) – विद्या, गद्य ....

द् + ध = (द्ध) – बुद्धि, बुद्धू ....

द् + व = (द्व) – विद्वान, द्वेष ....

(ख) क्षमा = क् + ष् + अ + म् + आ

कक्षा = ... + ... + ... + ... + ...

मित्र = म् + इ + त् + र् + अ

पत्र = ... + ... + ... + ... + ...

ज्ञान = ज् + ञ् + आ + न् + अ

यज्ञ = ... + ... + ... + ... + ...

परिश्रम = प् + अ + र् + इ + श् + र् + अ +म् + अ

विश्राम = ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

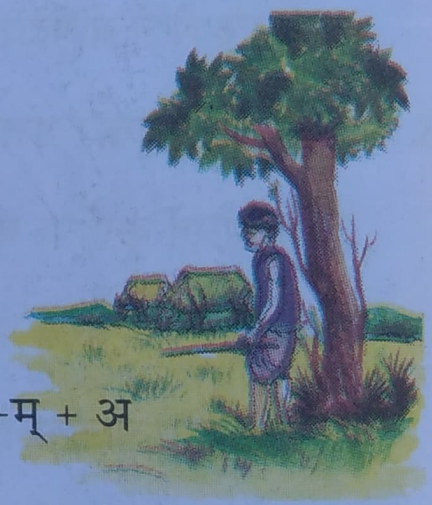

8. पढ़ो, समझो और लिखो :

अरजन = *अर्जन*

मूरख = ...

मरम = ...

धरम = ...

करम = ...

शरम = ...

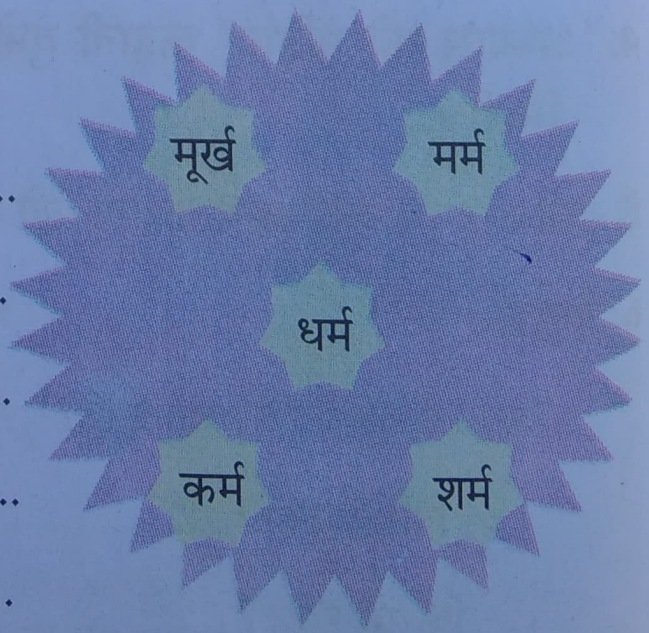

9. जिन शब्दों का अर्थ प्रायः एक-सा होता है, उन्हें **पर्यायवाची शब्द** कहते हैं। इन्हें **समानार्थी शब्द** भी कहा जाता है। जैसे- हवा, पवन, समीर आदि।

नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :

बालक = ...

औरत = ...

गुरु = ...

घड़ा = ...

पानी = ...

प्रसिद्ध = ...

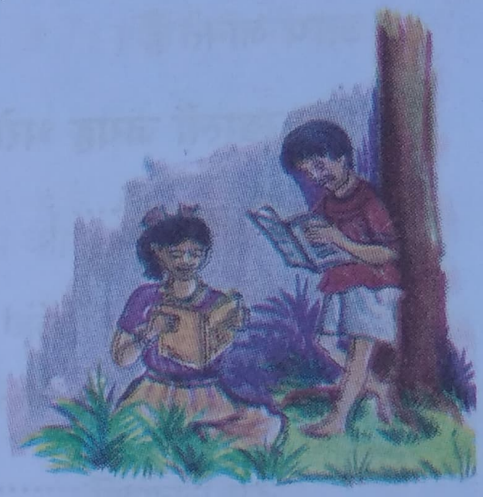

10. पाठ में आए पाँच संज्ञा शब्द चुनो और उनसे वाक्य बनाओ।

11. अपने शिक्षक की मदद से इस दोहे का अर्थ समझो :

करत करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान

रसरि आवत जात ते, सिल पर पड़त निशान।

12. सुलेख लिखो :

परिश्रम के बिना जीवन में कोई भी सफल नहीं हो सकता।

.....

.....

.....

13. आओ, इन वाक्यों को समझें :

मैं पढ़ता हूँ । **तू पढ़ता है।** **तुम पढ़ते हो।**

वह खेलता है। **राजू पढ़ता है।** **हम पढ़ते हैं।**

आप जानते हैं। **सोनिया और मनोज खेलते हैं।**

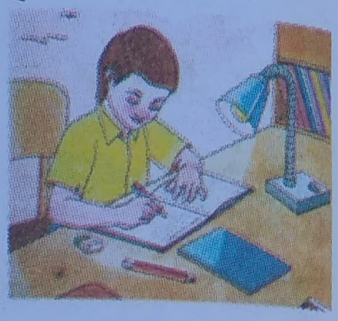

अब खाली जगह भरो :

मैं छात्र .... । मैं छात्रा .... ।

तू लिखता .... । तुम लिखते .... ।

तुम कलाकार .... । तुम महान .... ।

हम विद्यार्थी .... । हम साथ-साथ पढ़ते .... ।

आप शिक्षक .... । मदन और करीम दोस्त .... ।

14. आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

मंदबुद्धि	= कम बुद्धिवाला	जगत	= कुएँ के ऊपर का चबूतरा
कमजोर	= दुर्बल	गड्ढा	= जमीन में गहरा स्थान
सहपाठी	= साथ पढ़नेवाला	उत्तर	= जवाब
निश्चय	= निर्णय	प्रसिद्ध	= मशहूर